Desh-videsh Ke Jeev-jantuoan Ki Lok Kathayen - Vol. 3
देश-वदिश के जीव-जन्तुओं की कथाएं (भाग –3)

Author: Santhini Govindan सांथनी गोवन्दिन
Format: Paperback
ISBN: 8178060582
Code: 9233D
Pages: 24
Price: Rs. 36.00 **US$** 3.00

Publisher: Unicorn Books
Usually ships within **15** days

पशु-पक्षी मानव जीवन के अभन्नि अंग हैं. तनकि वचिार कीजएि यदि हमें चड़ियिों का चहचहाना, पपीहे की पीहू-पीहू और कोयल की कूक सुनने को न मलिती , मयूर का नृत्य, वन में वचिरण करते मृग देखने को न मलिते, तो हमारा जीवन कतिना नीरस होता. आपको यह जानकर शायद हंसी आए कि इन पशु-पक्षयिों को लेकर मनुष्य ने कैसी-कैसी कल्पनाएं कीं. उदाहरण के लिए बाघों के शरीर पर काली धारयिां कैसे बनीं? मगरमच्छ की पीठ खुरदरी क्यों होती है? कुत्ता अजनबयिों को देखकर भोंकता क्यों है? आदि-आदि.
कालान्तर में यही कल्पनाएं लोक-कथाओं का धारण करती गईं. आज वशि्व के अनेक देशों जैसे- भारत, वयितनाम, अफ्रीका, अमेरकिा, फलिस्तीन आदि में इन पशु-पक्षयिों के वषिय में अनेक प्रकार की लोककथाएं प्रचलति हैं. उन्हीं में से कुछ प्रमुख कथाएं चुनकर इस पुस्तक में समाहति की गई हैं.

About Unicorn Books

Unicorn Books publishes an extensive range of books that are both affordable and high-quality.